पाठ 18

हमर कतका सुंदर गाँव

46IQ5E

–प्यारेलाल गुप्त

ये कविता म कवि ह गाँव के सुघरइ के बरनन करे हें। हमर गाँव ह लछमी माता के पाँव सहीं सुग्घर हे। लीपे–पोते घर–दुवार हे,कोठार म पहार सहीं खरही गँजाय हे। तरिया म पक्का घाट बने हे,खेत म पिंयर–पिंयर सरसों फूले हे अउ गाँव के जम्मो मनखे मन आपस म राजी–खुसी से रहिथें।

अइसने भाव कवि ह ये कविता म परगट करे हें।

हमर कतका सुंदर गाँव,
जइसे लछिमी जी के पाँव।
घर उज्जर लीपे – पोते ,
जेला देख हवेली रोथे ।
सुग्घर चिकनाये भुइयाँ ,
चाहे भात परुस लय गुंइयाँ ।
अँगना मा तुलसी घरुवा ,
कोठा मा बइला गरुवा।
लकठा मा कोलाबारी,
जहँ बोथन साग–तरकारी।
ये हर अनपूरना के ठाँव।

बहिर मा खातू के गड्ढा,
जहँ गोबर होथे एकट्ठा।
धरती ला रसा पियाथे,
ओला पीके अन उपजाथे।
ल देखा हमर कोठार,
जहँ खरही के गंजे पहार।
गये हे गाड़ा बरछा,
जेखर लकठा मा हवे मदरसा।
जहँ नित कुटें, नित खायँ।।

जहाँ पक्का घाट बँधाये,
चला–चला तरइया नहाये।
ओ हो, करिया सफ्फा जल,
जहँ फूले हे लाल कँवल।
लकठा मा हय अमरइया,
बनबोइर अउर मकैया।
फूले हय सरसों पिंवरा,
जइसे नवा बहू के लुगरा
जहँ घाम लगे न छाँव।

आपस मा होथन राजी,
जहँ नइये मुकदमाबाजी।
भेदभाव नइ जानन,
ऊँच – नीच नइ मानन।
दुख–सुख मा एक हो जाथी,
जइसे एक दिया दू बाती।
जहँ छल–कपट न दुराँव,
हमर कतका सुंदर गाँव।।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

उज्जर	=	उज्जवल,स्वच्छ	हवेली	=	महल
परुस लय	=	परोस लें	गुइयाँ	=	साथी, सखी
कोठा	=	गौशाला	गरुवा	=	गाय–बैल आदि जानवर
लकठा	=	नजदीक,पास	कोलाबारी	=	बाड़ी
खातू	=	खाद	कोठार	=	खलिहान
खरही	=	कटी हुई फसल की ढेरी	बरछा	=	गन्ने का खेत
लुगरा	=	साड़ी	दुराँव	=	किसी से बात छिपाकर रखने का भाव
तुलसी घरुवा	=	तुलसी का चबूतरा, तुलसी चौंरा			

अभ्यास

पाठ से

- कवि ह गाँव मन ल लछिमी जी के पाँव काबर कहे हावय?
- गाँव के घर मन ल देख के हवेली काबर दुःखी होथे?

- अनपूरना के ठाँव कहाँ हवय?
- धरती ह कइसे किसम ल अन्न उपजाथे?
- कोठा मा का–का जिनिस रखे जाथे?
- ''जइसे एक दिया दू बाती'' पंक्ति म कवि ह का बतावत हवय?
- कवि ह नवा बहू के लुगरा ल सरसों के फूल के संग तुलना काबर करे हवय।
- अँगना में तुलसी–चौरा लगाय के का कारण होही?

पाठ से आगे

1. 'अपन गाँव ह सब झन ला सुघ्घर लागथे'। ये कहावत हवय। तुमन ल अपन गाँव कोन कारण से सुघ्घवर लागथे? सुघरई के बरनन दस वाक्य म लिखव।

2. गाँव के मनखे मन आपस म मिलजुल के रहिथे अऊ बड़े–बड़े कारज ल घलो कर लेथे। वोमा सब झन के सहयोग रहिथे। अइसने कोई काम के उदाहरण अपन घर के बड़े मन ले पता लगाके लिखव।

भाषा से

1. ''हमर कतका सुंदर गाँव'' कविता में आये वाक्य सुंदर गाँव की तुलना लछिमी जी के पाँव ले करे गेहे।

जौन ला उपमा कहिथे। हिन्दी में एला समता या तुलना घलो कहे जाथे।

'' जिहाँ दुठन व्यक्ति, समान, गुण, धर्म, स्वरूप असन विशेषता के आधार पर बरोबर दिखथे, उही ह उपमा अलंकार होथे। उपर में दे वाक्य के जइसन पाठ में आये उपमा अलंकार के उदाहरण ल छाँटके लिखव।

2. खाल्हे लिखाय वाक्य ल ध्यान से पढ़व ''मे हा कलिकुन रायपुर गे रहे हँव'' ये वाक्य ह काम के होये के बोध करावथे जौन ल **भूतकाल** कहिथे। अऊ 'मे हा जावत हँव', 'में हा खात हव, ''में हा नहावत हँव,।' सबे वाक्य म काम होवत हे बताय गेहे। ए पाय के ये ह वर्तमान काल के वाक्य आय। अइसने किसम ल ''मे कालि जाहू, 'खाहूँ', 'नहाहूँ' आदि शब्द मन ह भविष्य काल के बोध कराथें।

उपर दे उदाहरण के आधार ले पाठ ले भूतकाल, वर्तमान काल अऊ भविष्य काल के वाक्य खोज के लिखव।

योग्यता विस्तार

1. गाँव ल साफ सुथरा रखे बर तुँहर का–का योगदान होही? ओला लिखव।
2. हमर कतका सुंदर गाँव जइसन अऊ दूसर पाठ ल शिक्षक के सहायता ले पढ़व।

●●●